सिद्धि सदन की
अष्टयामीय सेवा
स्वामी रामहर्षणदासजी

॥श्री रसिकजन वल्लभाभ्याँ नमः॥
श्री रसाचार्येभ्यो नमः

श्री सिद्धि सदन की अष्टयामीय सेवा

श्रीमद् रामहर्षणदास जी
स्वामिना प्रणीतं

स्थान- श्री रामहर्षण कुंज, श्री अयोध्या

बसन्त पंचमी सं.2050

अनन्त श्री विभूषित
स्वामी श्री रामहर्षण दास जी महाराज

श्री सिद्धि-सदन-बिहारी-बिहारिणी जू

ॐ गुं गुरवे नमः
श्री रसाचार्याय नमः
-: ॐनमः सीतारामाभ्यां :-

* श्री सिद्धिसदन की अष्टयामीय सेवा *

देव-दुर्लभ सर्व भावेन शोभा सम्पन्न स्वर्ण एवं वैदूर्यादि मणियों से विनिर्मित परिकोटे के भीतर तेरह कक्षाओं वाला श्रीमन्मिथिलेशजी का राजभवन है। राजभवन के सुन्दर परिकोटे के भीतर ही मिथिलेश जी के महल से उत्तर भाग की विस्तृत भूमि पर श्री सिद्धिसदन एवं (युवराज) लक्ष्मीनिधि निकुंज नाम के विमानाकार स्वर्णादि महार्ह रत्नों से जटित दो नव्य-भव्य भवन हैं जिन्हें देखकर भोग-विभूति से भरी समस्त देवपुरियाँ विलज्जित हो जाती हैं, ब्रह्मादि देव समुदाय आश्चर्य के सागर में गोते लगाकर अस्त से होने लगते हैं, विधि- विनिर्मित सृष्टि-सौन्दर्य, जहाँ के सौन्दर्य की खवाशी करने के लिए मचल पड़ता है, उन्हीं दोनों भवनों से दक्षिण श्री मिथिलेश-महल एवं सुनैना-सदन हैं अर्थात् पूर्व दिशा में बने हुए श्री युवराज-भवन से दक्षिण विमानाकार श्री सीरध्वज सदन है तथा युवराज भवन से पश्चिम दिशा में स्थित सिद्धिसदन से दक्षिण दिशा में श्री सुनैना- सदन अपनी शोभनीय सम्पत्तियों से सर्वाङ्गतया शोभायमान हो रहा है।

सुनैना-सदन का क्षेत्र अन्य तीनों सदनों से अधिक विस्तार वाला है क्योंकि सुनैना-सदन के भीतर ही सीता-सदन अपने सौन्दर्य से सब सदनों को प्रकाशित एवं सौन्दर्य प्रदान करता हुआ प्रतिष्ठित है।

उक्त चारों भवनों के बीच की विस्तृत भूमि पर सहस्त्रों स्तम्भों से विनिर्मित विधि विस्मयकारी मणि मंडप (विवाह मंडप) बना हुआ है, जिसे देखकर लगता है कि करोड़ों कामदेव एकत्र होकर मंडप की रचना स्वयं अपने पाणि-पल्लवों से किये हैं, तभी तो सुख-सुषमा-श्रृंगार के साथ सौन्दर्य की मूर्ति, मंड़प के रूप में

त्रिभुवन वासियों सहित त्रिदेवों के नेत्रों का विषय बन रही है।

श्री सिद्धि-सदन एवं लक्ष्मीनिधि-निकुंज एक नव्य-भव्य, दृष्टचित्तापहारी परिकोटे के भीतर है। स्वर्ण से युक्त वैदूर्यादि मणियों से बने जगमगाते हुए परिकोटे में चारों दिशाओं की ओर दीर्घ द्वार हैं, जिनमें स्वर्ण हीरा, माणिक, प्रवालादि से विनिर्मित वज्रमय कपाट लगे हुए हैं। इसी प्रकार श्री मिथिलेश-महल और सुनैना-सदन का भी आकार, प्राकार है।

परिकोटे के भीतर श्री सिद्धिसदन का मुख्य द्वार पूर्व की ओर तथा लक्ष्मीनिधि-निकुंज का मुख्य द्वार पश्चिम की ओर एक दूसरे के सम्मुख है। दोनों भव्य भवनों के बीच छोटे कद के सुगंधित फूल व फल देने वाले वृक्ष हैं, जिनकी सुगन्ध से सुर-ललनाओं का स्वर्ग-सुख सम्भोगी मन भी वहाँ विहार करने को मचल उठता है। यहाँ की सारी भूमि स्वर्णमयी है, बीच-बीच में हरित मणियों से जटित होने के कारण लहराती हुई नदी में, पानी का सादृष्य दृष्टिगोचर होने लगता है। क्यारियाँ, रौस तथा थाले, गमले स्वर्ण के बने हुए विविध प्रकार के मणियों से जड़े हुए, बगीचे के आकाश में नक्षत्र समूहों में कई चन्द्रों की छटा उत्पन्न कर रहे हैं। जहाँ-तहाँ हंस, मोर, पारावत आदि पक्षी दीवालों में बैठे हुए, परिकोटे की शोभा समुन्नत-शील बना रहे हैं। शुक, पिक, मोर, चातक आदि पक्षी गृह-बाग के वृक्षों की डालियों में बैठे कलरव कर रहे हैं। जहाँ-तहाँ छोटे-छोटे गहरे जलाशयों में मछलियाँ एवं जलपक्षी किलोल कर रहे हैं। यत्र-तत्र मृग-शावक भी विचरते हुए बगीचे की शोभा परिवर्धित कर रहे हैं। बड़ा ही मनोरम तथा सुहावना दृष्य दर्शकों के मन को आकर्षित करने में सक्षम हो रहा है। जहाँ-तहाँ बैठने के लिए मणि जड़ित स्वर्ण सिंहासन स्थायी रूप से जगमगा रहे हैं। सिद्धि-सदन एवं लक्ष्मीनिधि-निवास के मुख्य द्वारों को मिलाने के लिए रत्नजटित चौड़ा मार्ग है, लम्बाई बहुत नहीं है। मार्ग के दोनों किनारों पर स्वर्ण गमलों में सुन्दर सुगन्धित पुष्प खिले हुए हैं। आने जाने के लिए मखमली कोमल स्तरण बिछे हैं। जिससे भवन के ईश्वर एक दूसरे महल में आते जाते हैं, मार्ग की चित्रकारी द्रष्टा के मन को

मोहित किये बिना नहीं रहती। लगता है कि त्रैलोक की कमनीय कान्ति पुञ्जीभूत होकर युगल द्वारों को अपनी आभा से आभासित कर रही है। युगल भवनों के प्रथम द्वारों के ऊपर बने हुए गोपुरों के भीतर मुनिमन-मोहिनी श्रवण-सुखदायी नौबत अष्टयाम बजती रहती है। द्वार में सशस्त्र नायिकाओं का पहरा रहता है।

श्री सिद्धिसदन सप्तावरण है। प्रत्येक आवरण में चारों तरफ से सुन्दर, सुसज्जित, सुगढ़, रत्नजटित, सुपुष्ट द्वार हैं। प्रत्येक आवरण अत्याकर्षक और वर्णनातीत है। अनुभव में आता है कि सर्व सिद्धियों को सिद्धि शक्ति प्रदान करने वाली महायोग माया का वैभव-विलास ही सिद्धिसदन के स्वरूप में दृष्टिगोचर हो रहा है।

प्रथम आवरण में सुरक्षा कार्य कुशला प्रमदागणों के निवास भवन बने हुए हैं, जो बड़े भव्य स्फटिक- मणियों से विनिर्मित हैं। अहर्निशि अपने आलोक से दिशाओं को आलोकित करते रहते हैं। भवनों के सामने वाटिकाएँ एवं आवरण के अन्दर जहाँ-तहाँ जाने के सुहावने सुन्दर मार्ग हैं, जलाशय हैं, भाँति भाँति के पक्षियों के कलरव से आवरण बड़ा ही मनोरम लगता है।

द्वितीयावरण में विविध वेश में आने वाली अतिथि रूपा देव कन्या, गन्धर्व कन्या, यक्षकन्या, नागकन्या एवं राजकन्याओं तथा अन्य राज्य के युवराज्ञियों के रहने के आवास बने हुए हैं, जो इन्द्रपुरी के भवनों को अपनी अलौकिक आभा से विलज्जित करने वाले हैं। सबके भवनों के सम्मुख नन्दन वन की श्री को अपहरण करने वाली गृह-वाटिका अपनी रम्यता तथा भव्यता से सुर-सुन्दरियों के मन को भी मुग्ध करके उन्हें अपनी स्थली में विहार करने के लिए सर्वकाल में बाध्य किये रहती है।

तीसरे आवरण में अन्तः पुर निवासिनी महिलाओं के विहार करने के लिए परम रम्य आराम (उपवन) है, जिसमें चारों दिशाओं में कृत्रिम सरिता उत्ताल तरंगों से कल्लोल करती हुई वन श्री एवं मणिजड़ित घाटों तथा कई प्रकार के विकसित दिव्य कमलों से कमनीय कान्ति को प्राप्त, कर वस्त्राभूषणों से सुसज्जित सुरभित शरीर वाली सुर-सुन्दरी के छवि को छीने ले रही है। इसी प्रकार उपवन में बहुत से सरोवर, सरसियाँ तथा वापियाँ, स्वर्ण

तथा मुक्ता प्रवाल और वैदूर्यादि से विनिर्मित घाटों से जगमगाते हुए अपनी अलौकिक आभा दसों दिशाओं में विखेर रहे हैं। खिले हुए पंकज पँक्तियों के ऊपर मड़राते हुए पराग-प्रेमी भ्रमरों की अनेकानेक अवलियाँ, सरोवरादि जलाशयों की शोभा परिवर्धित करने की सहायिका सिद्ध हो रही हैं। सुन्दर सुन्दर सुगन्धित सुमनों की कतारें तथा वसन्त श्री से सम्पन्न अनेकानेक फल वाले वृक्ष अपनी सम्पत्ति से संयुक्त मदन की वाटिका का मद-मर्दन कर रहे हैं। यत्र-तत्र वृक्षों और लताओं से स्वभावतः बने हुए कुंजों का अप्रतिम सौन्दर्य, विश्वकर्मा की रमणीय रचना शैली का तिरस्कार कर रहा है। जहाँ-तहाँ रत्न विनिर्मित देव मन्दिरों की जगमगाहट सौर मण्डल में स्थित लोकों की द्युति को दमन करने में किंचित संकोच नहीं कर रही है। आवरण में स्वर्णिम क्रीड़ा भूमि तथा यत्र-तत्र लोगों के बैठने के लिए स्थित स्वर्ण के आसन, सुरलोक में स्थित सुर सुन्दरियों की विहार स्थली के वैभव को तिरस्कृत करते हुए ब्रह्मा की सृजन शक्ति को चुनौती सी दे रहे हैं।

चतुर्थ आवरण में श्री सिद्धि कुअँरि जी की सेविकाओं के समूह सदन बने हुए हैं, जिन दासियों का दर्शन कर रती, शची शारदा इत्यादि देवियाँ विलज्जित हो कर, अपने को सर्वभावेन नगण्य समझती हैं। इस आवरण के स्वर्ण के सदन वैदूर्यादि मणियों से जटित होने के कारण रात्रि काल में भी दिवसीय भ्रम उत्पन्न कर देते हैं प्रत्येक भवनों की गृह वाटिकाओं तथा जलाशयों की सर्वप्रकारेण रमणीयता द्रष्टा की दृष्टि को अन्य दृष्यों से दूर करने में सर्वथा सक्षम रहती है। फूलों एवं फलों के भार से नव-नत शाखाएँ वैदूर्यादि रंग बिरंगे रत्नों से जटित मार्गों की शोभा को परिवर्धित करती हुई, सबके मन को अपनी ओर आकृष्ट कर मुग्ध किये बिना नहीं रहती। यह आवरण चारों ओर से दर्शनीया दासियों द्वारा भरा रहता है।

पञ्चम आवरण में सिद्धि जी की सखियों के सदन स्वर्ग सदनों को तिरस्कृत करते हुए अपनी आभा से स्वर्णिम सुमेरू पर्वत की चमक को विलज्जित कर रहे हैं। प्रत्येक भवन में सुरभित सुमनों की वाटिका, सुर- सुरभी एवं सुरतरू का दिव्य दर्शन होता

है। जलाशय सभी सदनों की शोभा और सौख्य का परिवर्धन कर रहे हैं, जिनमें जल-कुक्कुट आदि भाँति-भाँति के पक्षी निवास करते हैं। खिले कमलों के वन में भ्रमरों की गुन-गुनाहट बड़ी ही मनोरम और रस का संचार करती है। भवनों पर मोर, हंस, पारावत आदि पक्षी बैठकर अपनी शोभा परिवर्धित कर रहे हैं। वाटिकाओं में मृग-शावकों की केलि ब्रह्मा के हृदय को भी अपनी ओर आकृष्ट किए बिना नहीं रहती। यहाँ की स्वर्णिम भूमि व रत्नों से जटित मन-मोहक मार्ग अपनें सौन्दर्य से सबके चित्त को अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं। अलौकिक सेवा साज से सम्पन्न सेविकायें, सभी सखियों के सदनों में शोभायमान हो रही हैं।

छठे आवरण में सिद्धों के विमान को विलज्जित करने वाला गगनचुम्बी नव खण्ड का भव्य भवन है, जो स्वर्ण एवं वैदूर्यादि महार्ह रत्नों से विनिर्मित है। भूमि तथा भीति की बनावट ऐसी लगती है कि जैसे करोड़ों कामदेव अपने पाणि पल्लवों से स्वयं कला-कौशल्य का दिग्दर्शन कराने के लिए इसका निर्माण किये हों। यही भव्य भवन श्री सिद्धि जी का निवास स्थान है, जिसमें कुँअर लक्ष्मी निधि जी के साथ सदा रहती हुई पति प्राणा कुँअर वल्लभा पातिव्रत धर्म की चरम स्थिति में स्थित रहकर पति सुख के लिए देह यात्रा और आत्मयात्रा का निर्वाह सर्वभावेन सर्वदा किया करती हैं, जिन्हें देखकर आकाश के नीचे-ऊपर रहने वाले सभी प्राणियों का स्वर लक्ष्मीनिधिवल्लभा के भाग्य की प्रशंसा करने के लिए बिना प्रयत्न के मुखरित हो पड़ता है। यह सदन सुमेरू पर्वत पर बने हुए देव भवनों को प्रणाम करने के लिए हठात आकर्षित कर लेता है। कभी-कभी भवन के ऊपरी आकाश में आये हुए देव-विमानों से वर्षाये गये पुष्पों से भवन की छत पूर्णतया आच्छादित हो जाती है। आठों दिशाओं में पृथक-पृथक सुख-सम्भोग की सर्व सामग्रियों से भरा हुआ एवं अनेकानेक कक्षों से सुशोभित ब्रह्मा को भी विस्मय उत्पन्न करने वाला उपर्युक्त भव्य भवन बना हुआ है। भवन के सम्मुख गृहवाटिका है, जिसमें सुन्दर-सुन्दर सुगन्धित पुष्पों की पंक्तियाँ बड़ी ही मनोरम लगती हैं- छोटे कद के सफल वृक्षों की कतार जो समीपस्थ लताओं के

संस्पर्श को प्राप्त कर अपनी रमणीयता से द्रष्टा के मन को मुग्ध करने में सर्वथा समर्थ हो रही है। सभी वृक्षों के थाले व गमले स्वर्ण एवं विविध रत्नों से बने हुए ऐसे लग रहे हैं, जैसे आकाश में छोटे बड़े नक्षत्रों का मण्डल। तुलसी की बगीची बड़ी ही मनोरम है, जिसकी सुगंध से दिशाएँ गंधव्यापिनी बन रही हैं। वाटिका की भूमि स्वर्णमयी है, जिसमें विविध रंग के विविध रत्नों को ऐसा जड़ा गया है कि कहीं-कहीं जल भरा प्रतीत होता है, तो कहीं-कहीं लहरों के साथ जल बह रहा है, कहीं कुछ दृष्य कहीं कुछ दृष्य प्रतीत हो रहे हैं। यत्र-तत्र बैठने के लिए स्वर्ण-सिंहासन अचल रूप से बनाये गये हैं। छोटे-छोटे जलाशय भी जहाँ- तहाँ रत्न जटित घाटों से शोभायमान हो रहे हैं, जिनमें कमल खिले हुए हैं भ्रमर गुंजार कर रहे हैं, जलपक्षी कलरव कर रहे हैं। गृह वाटिका में मोर-कोयल-शुक-चातक की ध्वनि गूँजती रहती है। शीतल, मन्द, सुगन्धित त्रिविध वायु सदा बहती हुई सुरभित शरीर वाली सुर सुन्दरियों को श्री सिद्धिसदन की गृह वाटिका में विहार करने के लिए लोभ उत्पन्न कर देती है। श्री सिद्धिसदन की रमणीयता का दर्शन कर श्री सिद्धि कुँअरि जी के ननँद ननदोई श्री सीताराम जी को यहाँ से अन्यत्र जाने की वार्ता भी अप्रियकर प्रतीत होती है, अस्तु, इस भवन की भव्यता का इससे अधिक और क्या प्रमाण हो सकता है कि जहाँ सब को रमाने वाले राम, रसलोलुप रसिक बन कर अपने परिकरों के बीच रस का आदान-प्रदान नित्य किया करते हैं। अयोध्या भी कहीं है, इसका स्मरण भी रसिकाधिराज को नहीं होता।

सातवें आवरण में कोहवर भवन है। यह भवन बहुत ही भव्य एवं भास्वर है। शुद्धातिशुद्ध स्वर्ण की भीतियों पर बहुमूल्य हीरे जवाहरातों की पच्चीकारी की गयी है। यह नव खण्ड का बना हुआ गगन का चुम्बन कर रहा है, इसके बीच के शिखर जो नव खण्ड के ऊपर बने हैं वे बहुत ही ऊँचे तथा तेज व सौन्दर्य की राशि-राशि बिखेरते हुए अन्तरिक्ष गामी सिद्धों के विमानों को टकराने का भय उत्पन्न कर देते हैं। सिद्धि-कुँअरि जी के निवास स्थान तथा कोहवर भवन के बीच चारों ओर गृह वाटिका बड़ी ही

रमणीय है, जो दोनों सदनों की शोभा का परिवर्धन कर रही है। कोहवर सदन के मुख्य द्वार, पूरब, पश्चिम और उत्तर, दक्षिण हैं जिनमें हीरे से जड़े स्वर्ण कपाट एवं चौकठे बड़ी कला कुशलता के साथ बनाई गई हैं। स्वर्ण श्रृँखलाएँ और अर्गलाएँ बड़ी सुपुष्ट लगी हुई हैं। दरवाजों पर लगे कृत्रिम चन्द्र-सूर्य अपने प्रकाश से सही सूर्य चन्द्र का भ्रम उत्पन्न कर देते हैं। द्वारों से सुन्दर सुमनोहर मार्ग श्री सिद्धि-निवास के चारों मुख्य द्वारों से जुड़े हुए हैं। सभी मार्ग स्वर्ण तथा विविध रत्नों से बने हुए आकाश पथ अर्थात देव-बीथी की तरह जग-जग कर रहे हैं, मार्ग के दोनों ओर सुन्दर सुगन्धित पुष्प जो भूमि तथा स्वर्णगमलों में लगे हुए मार्ग की कमनीयता को और भी परिवर्धित कर रहे हैं। इत्र का छिड़काव तथा सुरभित सुमनों से बनाये हुए चौके चित्र, पथ की छबि को छहरानें में विशेष योग दे रहे हैं। द्वारों पर मणि चौकें पूरी हुई हैं तथा स्वर्ण कलश रत्नों से चित्रित एवं मणि दीपों से संयुक्त शोभा का संवर्धन कर रहे हैं। द्वारों के दोनों ओर सुरभित सुमनों से युक्त बेलि स्वर्ण थालों में लगी हुई हैं।

कोहवर-भवन के मध्य भाग में अष्ट कुंज है, जिसमें श्री लक्ष्मीनिधि जी तथा श्री सिद्धि जी के प्राण-अतिथि श्री कोहवर-बिहारी-बिहारिणी जू जिन्हें सिद्धिसदन बिहारी बिहारिणी जू भी कहते हैं, अष्टयाम बिहार करते हैं। अष्टकुंजों का आकार कमल की सादृश्यता से संयुक्त है। कमल-कर्णिका के स्थान पर शयन कुंज है, जिसके बीच में एक रत्न वेदिका बनी है जो बड़ी भव्य और भास्वर है, आरोहण के लिए चारों ओर से एक स्वर्णिम सोपान है। वेदिका पर कामदार कोमल मोटी चादर पड़ी है, जिसमें लगी स्वर्णिम छुद्र-घंटियाँ एवं मणि मुक्ताएँ वेदिका के चारों ओर झूमती हैं। वेदिका के बीच में स्वर्ण एवं हाथी दाँत से विनिर्मित एक सुन्दर शयनासन (पलँग) पड़ा है, जो अपनी कमनीय कान्ति से भवन की भव्यता को वृध्दिंगत कर रहा है, उसके अंगों में जड़े हुए हीरों और नागमणि आदि मुक्तांओं का प्रकाश सर्व ओर बिखर रहा है। शयनासन में सुन्दर सुकोमल स्तरण एवं उपवर्हण अपनी महार्हता से शयन करने वाले श्री सीताराम जी महाराज (नवल

दम्पति) के अनन्त सौन्दर्य, माधुर्य, सौकुमार्यादि काय वैभव के द्यौतक प्रतीत हो रहे हैं। पलँग के ऊपर रम्यातिरम्य कामदार चाँदनी लगी हुई है, जिसके चारों ओर स्वर्ण एवं मणिमुक्ताओं से गुम्फित झालरें लटक रही हैं, बीच में चन्द्राकार रत्नजटित चँदोवा लगा हुआ है, जो चाँदनी की शोभा का परिवर्धन कर रहा है। रत्नजटित चाँदनी के चारों स्वर्ण दण्डे, कामदेव के यज्ञशाला के मध्यवर्ती चार स्तम्भों के समान शोभायमान हो रहे हैं। पलँग के नीचे रत्नजटित स्वर्ण चौकी रखी है, जिसमें सुन्दर स्वर्णाभ युगल चरण पादुकाएँ प्रतिष्ठित हैं, जिनके बीच-बीच में जड़े हुए, रत्न बिन्दुओं की ज्योति शोभा में निखार ला रही है। रत्न वेदिका ही में पलँग के समीपस्थ छोटी रत्न चौकी पर जलझारी आदि आवश्यकता के स्वर्णपात्र रखे हैं। दूसरी छोटी चौकी पर पीकदानी भी रखी है। शयनकक्ष में मखमली सुकोमल कालीन (गलीचा) कक्ष की लम्बाई चौड़ाई के बरावर बिछा है, जो बहुत सुन्दर कढ़ाई बुनाई के कारण चित्र विचित्र कला का आदर्श उपस्थित कर रहा है। कक्ष में एक रत्न सिंहासन, छत्र समन्वित रखा है। चमर, व्यंजन तथा अन्य सेवा साज भी उचित स्थान पर सुसज्जित रखे हैं। चारों ओर की भीतियों पर मुखावलोकन के लिए स्वर्ण के चौखटों पर दर्पण टँगे हैं। कक्ष में एक ओर सुन्दर वाद्य रखे हैं। वेदिका और सिंहासन के मध्य एक रम्य कोमल कामदार जमीन से कुछ ऊँचा आसन बिछा है, जिसके बीच चौसर बिछी है, पाँसे एवं गोटियाँ यथास्थान रखी हैं, दोनों ओर सुन्दर कोमल मसनद लगे हैं। शयन कक्ष में, मिथिला की समस्त लीलाओं के चित्र जो युगल किशोर से सम्बन्धित हैं, टँगे हुए हैं। लीला चित्रों के दर्शनों से ऐसा लगता है कि साक्षात लीला हो रही है तथा दोनों प्रिया- प्रीतम में पारस्परिक प्रेम का उद्दीपन होकर दोनों को दो से एक तथा एक से दो होने के लिए बाध्य कर देता है। शयन कक्ष में वातायनों द्वारा शीतल, मन्द, सुगन्ध त्रिविध समीर का आवागमन होता रहता है। शयनागार के आठों दिशाओं के अष्ट द्वारों पर सुन्दर कामदार स्वर्ण-सूत्र से विनिर्मित परदे पड़े हुए हैं, कपाट और चौकठे, स्वर्ण पर विविध रंग के रत्नों एवं मणियों को जड़कर बड़े कलाकारी से

बनाये गये हैं।

शयन कक्ष के पूरब का कक्ष कमल की पंखुड़ी के आकार का है। यह कक्ष शयन कक्ष का ही अंग है अर्थात् शयनागार के भीतर ही उसकी गणना है। यह कक्ष भी स्वयं की प्रभा से प्रकाशित हो रहा है। इस कक्ष में दिव्यास्तरण अर्थात् कोमल-कोमल कालीन बिछे हैं। कक्ष के उत्तरी भाग में रत्न जटित स्वर्ण विनिर्मित हिंडोरा स्थापित है तथा दक्षिण भाग में एक स्वर्ण चौकी पर जूतियाँ रखी हैं। छड़ी, विंजन, चमर, छत्र आदि सेवा साज भी इसी ओर बड़ी सुघड़ता से व्यवस्थित रखे हैं। सुसज्जित दर्पण भी भीति पर चारों ओर टँगे हैं। बीच के भाग में सेवा करने वाली सिद्धि जी, सहचरियों के सहित सेवा-साज लिए नित्य प्रातः युगल किशोर किशोरी के जगानें का प्रयास करती हैं अतः उन सबके खड़े होने व बैठने के लिए पर्याप्त रूप में उक्त स्थान, बड़ा मनोरम और खाली रहता है। यहीं पर प्रातः दो गायें नित्य नवल दम्पति को दर्शन देने के लिए लायी जाती हैं।

उक्त कुंज से दाहिनी ओर कमल के पुष्प-पत्र के आकार का बना हुआ वल्लभ कुंज है, जो परम रम्य है, इसमें दो खण्ड हैं जिसमें एक खण्ड प्रातः कृत्य के योग बहुत सुन्दर बना है। इसी भाग में एक रत्न चौकी है, जिसमें बैठकर युगल सरकार प्रभाती किया करते हैं, एक जल का स्वाभाविक कुण्ड है, आवश्यकीय स्वर्ण पात्र, सुन्दर मणि चौकियों पर रखे हैं, दंतवन व सुगंधित मसाले स्वर्ण पात्रों में दँतमंजन के लिए छोटी छोटी चौकियों पर रखे हैं, यत्र-तत्र पुष्पों के गमले सुशोभित हो रहे हैं। स्वर्ण खूँटियों पर अंग-प्रोक्षणी रखी हैं, एवं प्रकारेण दर्पण आदि अन्यान्य आवश्यक सामग्रियाँ सजाई हुई रखी हैं। दूसरे खण्ड के मध्य में एक स्वर्ण सिंहासन रखा है जो स्वर्ण एवं विविध रत्नों से बनाया गया है, सूर्य तुल्य अपनी प्रभा से कक्ष प्रान्त को प्रकाशित कर रहा है। जमीन में कामदार कोमल कालीन बिछे हैं, जिन पर कामदार कोमल मसनद लगे हैं। छत्र, चमर, बिंजन, छड़ी आदि राजोचित सेवन की सामग्रियाँ सजायी हुई, सुव्यवस्थित रखी हैं। एक ऊँचे वर्गाकार स्वर्ण चौके पर मधुपर्कादि वस्तुएँ सजायी हुई रखी हैं,

एक ओर वाद्य सामग्रियाँ भी रखी हैं। स्वर्णिम चौखटों पर चार बड़े दर्पण चारों ओर की भीतियों पर टँगे हैं। प्रकाश और वायु आने के लिए समुचित सुन्दर साधन हैं।

वल्लभ कुंज के दक्षिण ओर कमल पंखुड़ी के आकार का भव्य-नव्य बड़ा ही मनोरम स्नान-कुंज है, इसके भीतर की जमीन में कामदार कमनीय गलीचे बिछे हैं, एक स्वर्णिम रत्नजटित सिंहासन है, छत्र चमर आदि सेवा साज भी सजे रखे हैं, एक ओर भूमि से किंचित ऊँची एक रत्नवेदिका है, जिसमें कोमल स्तरण बिछा है तथा दो मसनद रखे हैं। कुंज के एक ओर छोटी किन्तु बड़ी भव्य वापी है, जिसकी गहराई कटि प्रदेश से थोड़ी अधिक है, चारों ओर उसमें गंगा, जमुना, सरयू, कमला-विमला आदि समस्त पवित्र नदियों की स्वर्णमयी मूर्तियाँ बनी हैं, स्नान के लिए उनके मुख से परम पवित्र तीर्थ भूत-जल अपने आप निकलता रहता है, जो शरद काल में गर्म और गर्मी समय में ठंडा रहता है। वापी के ऊपर रत्न जटित जमीन पर दो स्वर्णपीठ हैं जिसमें खड़े, होकर वस्त्र धारण किया जाता है। यहाँ स्वर्ण गमलों में लगे हुए फूल बावड़ी के चारों ओर शोभायमान हो रहे हैं। खुली भूमि पर अन्यान्य फूल पौधे लगे हुए कुंज की शोभा का परिवर्धन कर रहे हैं। कुंज के एक कक्ष के भीतर भी स्नानोपयोगी सामग्रियाँ, घड़ों में तीर्थ जल एवं छोटे जल पात्र रखे हैं। एक आलमारी है, जो अपनी शोभा से कक्ष को प्रकाशित कर रही है, जिसमें नित्य-नूतन वस्त्र पहनने के लिए रखे रहते हैं। खूटियों में अंग प्रोक्षणी टँगी है। रत्नजटित चरणपादुकाएँ रखी हुई, धारण करने वाले की वाट जोह रही हैं।

स्नान कुंज के दाहिनी ओर यज्ञकुंज है। यह कुंज बड़ा ही मनोरम है, यहाँ पहुँचने पर अपने आप आत्मस्थिति प्राप्त हो जाती है। भीति और भूमि सभी स्वर्ण एवं रत्नादि पदार्थों से विनिर्मित प्रकाश स्वरूप हो रही हैं। भीतियों पर अच्छे-अच्छे गृहस्थ-विरक्त महानुभावों के कलापूर्ण चित्र टँगे हैं, जो कर्म, भक्ति, ज्ञान, वैराग्य और योग की पराकाष्ठा में पहुँचाने के सहायक सिद्ध किए गये हैं। जमीन पर ऊर्ण रेशम तथा कौशेय सूत्रों से विनिर्मित कला पूर्ण

कामदार कोमल-कोमल कालीन (गलीचे) बिछे हैं। मध्य में बैठकर तिलक, पूजा, पाठ, जप एवं ध्यान करने के लिए शास्त्रीय नियमानुसार, न बहुत ऊँचे और न बहुत नीचे दो आसन बिछे हुए हैं। समीप ही सम्मुख रत्न पीठ पर दर्पण तिलक सामग्री, जपमाली एवं पाठ्यपुस्तकें रखी हैं। दाहिनी ओर छोटे रत्न पीठ पर पंचपात्र, पंचकटोरी, आचमनी तथा जलयुक्त गिलास और लोटा रखे हैं। बायीं ओर ईशान कोण में यज्ञ कुण्ड है, हवन की सामग्री रखी है एवं प्रकारेण प्रत्येक प्रकार के यज्ञानुष्ठान करने के लिए आवश्यक साधन की सुविधा तथा सामग्रियाँ समुपलब्ध हैं।

यज्ञकुंज के दाहिनी दिशा में श्रृंगार कुंज है, इस कुञ्ज की भीति तथा जमीन विविध रत्नों तथा स्वर्णादि उत्तम धातुओं से कलापूर्ण बनाई गयी हैं, जो वस्त्राभूषण से सजी धजी परम सुन्दरी नवल नायिका के जैसी छव्याछन्न दिखाई दे रही है। मखमली कामदार बिछावन के ऊपर एक जगमगाता हुआ स्वर्ण सिंहासन मध्य में रखा है। सिंहासन के पीछे कुछ अन्तर पर एक बड़ी रत्न जटित स्वर्ण आलमारी में युगल सरकार के नख-शिखान्त श्रृंगार के लिए वस्त्राभूषण नित्य नये-नये रखे रहते हैं तथा एक छोटी आलमारी में जावक अंगराग, कज्जल, कंघा, दर्पण, इत्र, फुलेल, चूड़ियाँ, पुष्प आदि श्रृंगार की उप सामग्रियाँ रखी रहती हैं, सिंहासन के दाहिनी ओर एक किंचित ऊँची रत्नवेदिका है, जो कोमल-कोमल स्तरणों से ढँकी है, जिस पर दो कामदार मखमली मसनद लगे हुए हैं, जहाँ बैठकर युगल किशोर किशोरी जू का श्रृंगार किया जाता है। एक ओर छड़ी, छत्र, विंजन, जलझारी, पुष्पमाल, इत्र, ताम्बूल एवं श्रृंगार भोग तथा श्रृंगार-आरती उतारने की सामग्रियाँ रखी हैं। भीति में चार बड़े दर्पण चारों ओर एक एक करके लगें हैं, सखियों और सेविकाओं के बैठने के लिए सुन्दर आसन सुव्यवस्थित हैं।

श्रृंगार कुंज के दाहिनी ओर कमल के पुष्प पत्र के आकार से युक्त सभा कुंज है, इसी में नित्य नव-नव लीला युगल किशोर की हुआ करती है, इसलिए इसे नित्यलीला निकुञ्ज भी कहते हैं। यह कुंज इतना रमणीय है कि जहाँ श्री सीतारमण श्री राम जी की

आत्मा रमने से उपरत नहीं होती। कुंज में कलाकारी से विनिर्मित नव्य भव्य कामदार कालीन बिछे हैं, भीतियाँ कनक के ईंटों से बनी हुई हैं, जिनमें जड़े हुए रत्न, मणि, माणिकों के द्वारा प्रकाश, भवन प्रान्त को प्रकाशित कर रहा है। दक्षिण भीति के समीप मध्य में एक बहुमूल्य रत्नों से जटित स्वर्ण सिंहासन रखा है। पश्चिम भीति के पास रत्न वेदिका के ऊपर अनेक प्रकार के वाद्य सुव्यवस्थित ढंग से रखे हैं। उत्तर भीति की ओर रंगमंच है, तथा समीप ही विशाल कक्ष में लीलोपयोगी विविध प्रकार की सामग्रियाँ रखी हैं। पूर्व भीति की ओर छत्र, चमर, विंजन आदि राजोपचार की सामग्रियाँ सजी एवं सुव्यवस्थित रखी हैं। किनारे छोटे-छोटे रत्न जटित पीठों पर माला-पुष्प-इत्र-पान आदि सामग्रियाँ शोभा का संवर्धन कर रही हैं।

नित्य लीला निकुंज के दाहिनी ओर पद्म पत्राकार भोग कुंज है। यह कुंज बहुत ही मनोरम है, इसमें उत्तराभिमुख भोजन करने के लिए दक्षिण भीति की ओर दो रत्न जटित पीठ प्रस्थापित हैं, जिसमें कोमल रेशमीस्तरण बिछा है। पीठों के सामने भोजनथाल रखने के लिए युगल स्वर्ण पाट हैं। पाटों में विविध प्रकार के रसमय पक्वान जब सजाकर रखे जाते हैं तब उनकी शोभा में बड़ा ही निखार आ जाता है। पास ही स्वर्णपाटों के दाहिनी ओर गेड़ुआ-गिलास स्वादयुक्त जल से भरे बड़े ही अच्छे लगते हैं। पाटों के सामने स्वर्णदीप में घृतबत्तियाँ जलती हुई, भवन में भव्य प्रकाश बिखेर रही हैं। इत्र का छिड़काव कुञ्ज में नित्य किया जाता है जिससे वह सुगन्धित बना रहता है। भवन के बाहर लगे हुए सुन्दर सुगन्धित पुष्पों की सुगंध भी वातायनों द्वारा आती रहती है, भवन मणिदीपों से बड़ा ही भास्वर प्रतीत होता है। इस भवन के पास लगे हुए दूसरे कक्ष में रसोई निर्माण का कार्य, युगल किशोर के लिए श्री सिद्धि जी की सखियाँ तथा वे स्वयं किया करती हैं। यह कक्ष भी बड़ा भव्य और सुसज्जित, आवश्यक सामग्रियों से सदा सम्पन्न रहता है।

भोग कुंज के दाहिनी ओर ही कमल-पुष्प के पत्र का आकार लिए हुए केलिकुंज है। इस कुंज की रचना ही ऐसी है कि

जिसे देखकर केलि करने की प्रवृत्ति स्वयं प्रादुर्भूत हो जाती है। मणि एवं रत्नों से जटित स्वर्ण भीतियों पर विविध मनोरम क्रीड़ा चित्र बने हैं। कहीं विस्तृत जमीन पर कोमल कामदार कालीन बिछे हैं जिसमें कन्दुक क्रीड़ा हुआ करती है, कहीं उत्तम बिछे हुए कालीन पर चौपड़, शतरंज बिछे हैं और सामने- सामने दो सुन्दर कामदार मसनद लगे हैं। जल-केलि के लिए सुन्दर, सुरम्य जलाशय है जो चारों ओर से हीरे व मणि माणिकों से जटित स्वर्ण ईंटों से बँधा हैं। एवं प्रकारेण विविध केलियों के तदनुसार साधन सामग्रियों से युक्त अत्यन्त रमणीक स्थल है। कुछ उचित सुन्दर स्थलों पर पुष्प भी लगे हैं, विविध वेलियाँ कुंज की शोभा बढ़ा रही हैं। कुछ उचित भूमि में यत्र तत्र फल वाले वृक्ष भी सुशोभित हो रहे हैं।

इस प्रकार से अष्ट कुञ्जों की परिस्थिति दिव्यातिदिव्य एवं योगिवर्यों को रमाने वाले श्री रामजी के मन को रमाने वाली है, लगता है कि कुंजों की सर्व विधि रचना जगन्मोहन कामदेव ने अपने हाथों से की है। प्रत्येक कुंज की व्यवस्था तद्कुंज की कुंजेश्वरी अपनी सखी सहेलियों एवं दासियों द्वारा श्री सिद्धिकुअँरि जी के निर्देशानुसार करती हैं।

शयनकुंज की चित्रा जी, वल्लभकुंज की नन्दा जी, स्नान कुंज की भद्रा जी, यज्ञ कुंज की पूर्णा जी, श्रृंगार कुंज की श्यामा जी, नित्य लीला निकुंज की लीलाविलासिनी जी, भोग-कुंज की रसप्रदा जी और केलि कुञ्ज की केलिप्रिया जी कुंजेश्वरी हैं। ये सब युगल किशोर किशोरी जी के कैंकर्य को परम पुरुषार्थ समझती हैं। तत्सुख सुखित्वम की भावना से भावित युगल प्रेम की प्रतिमा हैं, इनकी सेवा से परम सेव्य श्री सीताकान्त का मुख सदा प्रफुल्ल कमल के समान विकसित बना रहता है। ये सखियाँ श्री सिद्धि जी के भाव से भावित होकर उनके संकेतानुसार सेवा में संलग्न रहती हैं। ये सब सखियाँ कमल की सी कान्ति से युक्त सुरभित शरीर वाली द्वादशाब्द वयसा, रती, शची, सरस्वती आदि देवियों को विलज्जित करने वाली हैं, इन अष्ट कुंजेश्वरियों की सखियाँ और दासियाँ भी रती आदि नारियों के मन को मन्थन करने वाली हैं।

शयन कुंज से किसी भी कुंज में जाने के लिए द्वार हैं, उनमें कपाट लगे हैं, परदे पड़े हैं तथा किसी भी कुंज से किसी कुंज में पहुँचने के लिए क्रम से द्वार हैं, उनमें भी कपाट लगे हैं, परदे पड़े हैं। कुंज के भीतर से किसी कुंज में न जाकर, बाहर से भी जाया जा सकता है, वहाँ भी पुष्ट कपाट लगे हैं, पर्दे पड़े हैं। कुंज की शोभा अनिर्वचनीय और अलौकिक तथा असीम है। विश्व स्रष्टा सहित सभी देव देवियों के मन में विस्मय उत्पन्न करने वाली है- जहाँ आनन्द मूर्ति रसिकाधिराज रस स्वरूप श्री सीता राम जी विहार करते हैं, वहाँ के स्थल की इयत्ता का कौन वर्णन कर सकता है।

नव दूर्वादल तनु श्याम श्री चक्रवर्ती नन्दन श्री राम जी महाराज तथा चम्पक वर्णा चार्वाङ्गी चन्दन चर्चिता श्री नृपति-नन्दिनी श्री किशोरी सिया जू अपने वपु से पद्म-गन्ध को शयन मन्दिर में बिखेरते हुए शयन कर रहे हैं, बाहर कक्ष में प्रहरी दासियाँ सजगता के साथ सायुध पहरा दे रही हैं। ब्रह्म मुहूर्त जो ब्रह्मचिन्तन एवं ब्रह्म पूजन के लिए परम प्रशस्त है, प्राप्त हुआ। श्री सिद्धि जी अपनी सेविकाओं से समय पर नृत्य गीत, वाद्य के द्वारा अपने प्राणवल्लभ श्री कुँअर लक्ष्मीनिधि के सहित जगायी गयीं, दोनों आत्म- परमात्म चिन्तन कर स्नान क्रिया का निर्वाह करते हैं, तत्पश्चात् नित्यकर्म का अनुष्ठान करते हैं। इतने में ही, श्री सिद्धि जी की सखियों और शुचि सेविकाओं का आगवन हुआ, श्री सिद्धि जी सबसे वन्दित होकर सबके सहित अपने प्राण वल्लभ जू की पूजन आरती करती हैं, प्रणाम करते ही श्री लक्ष्मीनिधि जी अपनी प्राण प्रियतमा को उठाकर अपने आसन में बैठाकर प्यार से उन्हें परिपूर्ण कर देते हैं, तत्पश्चात् बड़े मधुर शब्दों में अपने प्राणों के प्राण श्री बहन-बहनोई की सेवा में शीघ्र पहुँचने के लिए प्रेरणा देते हैं। श्री सिद्धि कुँअरि जी अपनी सखी सहेलियों एवं दासियों के साथ कोहवर भवन को प्रस्थान करती हैं। समय बड़ा ही सुहावना लग रहा है, शीतल, मंद, सुगंध वायु बह रही है, तारे कुछ मलीन पड़ रहे हैं, कुक्कुट बाँग दे रहा है, पक्षियों की चहचहाहट बड़ी ही मनोरम लग रही है, ब्रह्म-घोष सुनायी पड़ रहा है, नौबत

मधुर-मधुर अपने नाद से श्रवणवन्तों को आनन्द प्रदान कर रही है। श्री सिद्धि जी अपनी सखियों एवं दासियों के द्वारा मनोहर वाणी में गाये हुए गीतों को, जो मधुर-मधुर वाद्यों के साथ भैरवी राग में, श्री युगल किशोर के गुणगणावली से युक्त गाये जा रहे हैं, सुनकर बड़ी प्रसन्न होती हैं तथा मंगला झांकी के दर्शन की त्वरा उनके हृदय में प्रेम की हिलोरें उत्पन्न कर रही हैं। शयन कक्ष के द्वार के बाहर कक्ष में खड़े होकर सिद्धि जी सहित सभी सखियाँ, समवेत स्वर से युगल सरकार को जगाने के लिए तत् सम्बन्धी गीत गा रही हैं, श्री नृपति नन्दन-नन्दिनी जी जग गये हैं, ऐसा संकेत पाकर कुंजेश्वरी के आदेश से एक सखी द्वार का झिल मिल-झिल मिल आवरण हटा देती है, बस! आनन्द की किरणों का प्रवाह बाहर की ओर बिखरने लगा, पलँग पर श्री किशोर किशोरी की आलस्य भरी प्रेम पूर्णा झाँकी का दर्शन होने लगा। श्री सिद्धि जी कुछ चित्रादि सखियों से समावृत भीतर प्रवेश करती हैं।

युगल किशोर, मंगल द्रव्यादि युक्त आरती उतारने की साज लिए हुए अपने भाभी व सरहज को देखकर बड़े प्रसन्न होते हैं, अपने कैंकर्य से ननँद, ननदोई का मुखाम्भोज विकसित अवलोकन कर सिद्धि जी के आनन्द सिन्धु में परिवर्धन बाढ़ आ जाती है। श्री सिद्धि जी बलैया लेकर प्रथम दोनों विभूतियों के बिखरे केश सम्हार कर वस्त्राभूषण सम्हाल देती हैं तत्पश्चात मंगला आरती करके मंगलानुशासन करती हैं, प्रणाम करती हैं, सेव्य-सेविका की पारस्परिक प्रीति, स्पर्शादि कृत्यों एवं चितवनि-मुसकनि के द्वारा प्रस्फुटित हो रही है। श्री सिद्धि जी दैनन्दिनी लीला करने के लिए पलँग छोड़ कर अन्य कुंजों में प्रस्थान करने की प्रार्थना करती हैं। श्री सिद्धि जी की इच्छानुसार प्रिया-प्रीतम प्रेममयी झाँकी का दर्शन कराते हुए पलँग से उतरते हैं, श्री सिद्धि जी दोनों प्राण के प्राणों के चरणों में चरण पादुका धारण कराती हैं, बाहर के कक्ष में युगल किशोर के उठने, चलने व भाव-भंगिमाओं के अनुसार सखियाँ नृत्य, वाद्य के साथ गीत गा रही हैं, श्रवण वन्तों एवं नयनवन्तों को चरम आनन्द की अनुभूति हो रही है। काहवर बिहारी-बिहारिणी जू उठते ही अपने

आनन्द का अनुभव कर रहे हैं।

तत्पश्चात युगल सरकार स्नान कुंज को पधारते हैं। सर्व प्रथम वहाँ पहुँचते ही कुंजेश्वरी आरती उतार कर एक शुभ्रासन में बैठाती हैं, पुनः श्री राम जी के उत्तरीय वस्त्राभूषण श्री सिद्धि जी प्रार्थना करके उतरवा देती हैं तथा श्री अङ्गों में सुगन्धित उबटन-तेल धारण कराती हैं, श्री सिद्धि जी की इस अंग सेवा से श्री नृपति नन्दन जू अत्यानन्द की अनुभूति करते हैं, श्री सिद्धि जी भी स्वकैंकर्य से अपने ननदोई के विकसित मुखारविन्द का दर्शन कर-करके परमानन्द के आस्वाद में मग्न हो जाती हैं। उनके हाथ कभी मन्द गति से प्यारे के श्री अंगों में तेल लगाने की क्रिया करते हैं, कभी अनुभवानन्द के कारण एक ही देश में स्थिर हो जाते हैं, कभी दर्शन करते-करते आँखें खुली ही रह जाती हैं, कभी स्तब्ध सी हो जाती हैं, कभी हर्षाश्रु प्रवाहित होते हैं, कभी रोमाञ्च हो जाता है तो कभी श्री राम जी के पद-कमल उनके मस्तक से लग जाते हैं। कभी पाणि-पङ्कजों को धीरे-धीरे तेल लगाकर सुहलाती हैं, कभी पाणि पङ्कजों को प्यार से ओत-प्रोत कर देती हैं। केश में फुलेल सेवन कराने की प्रक्रिया को कहते ही नहीं बन रहा है, श्री मुखाम्भोज में फुलेल लगाते समय दर्शन, स्पर्श, व सेवन क्रिया के प्रकार से अपने ननदोई के बढ़ते हुए आनन्द को देखकर निमिकुल-वधू भाव समाधि में तल्लीन हो जाती हैं। पुनः सचेत होकर सर्वाङ्ग में तेल धारण कराकर श्री नृपति नन्दिनी जू को दूसरे कक्ष में पधरवाती हैं। सर्वाङ्ग कनकोज्वला श्री किशोरी जी के शरीर मे तेल उबटन धारण कराते समय ननँद-भाभी के पारस्परिक दर्शन, स्पर्श व सेवन-प्रक्रियाजनित आनन्द की अनुभूति अनिर्वचनीय है, वहाँ मन व वाणी की गति नहीं है। तेल धारण करायी हुई श्री किशोरी जी को गोदी में लेकर श्री सिद्धि जी अतिशय सस्नेह दुलार करती हैं, श्री अङ्गों की छबि देखते ही आनन्द विभोर हो जाती हैं। जिन श्री अङ्गों की आंशिक शोभा भी रती, रमोमा आदि देवियों को विलज्जित करने वाली है, उन श्री किशोरी जी को अपने अङ्क में लिए हुए श्री सिद्धि जी अपने भाग्य-वैभव का मूल्याङ्कन नहीं कर पाती। पुनः समय से युगल

सरकार को पृथक-पृथक स्नान कराती हैं, दिव्य, बाल सूर्य के सम-प्रभ सामयिक कौशेय वस्त्र धारण कराकर चरण पादुका समर्पित करती हैं, तत्पश्चात यज्ञ कुंज में पधारने की प्रार्थना करती हैं।

अपनी भाभी व सरहज से प्रार्थित, युगल किशोरी-किशोर यज्ञ भवन प्रस्थान करते हैं। समय से सेवा सम्बन्धित गीत सखियों के द्वारा गाये हुए, अपनी मधुरता से माधुर्य महोदधि के मन को मुग्ध करने में सक्षम हो रहे हैं। कुंजेश्वरी आरती करके बलैया लेती हैं। श्री सिद्धि जी दोनों अपने प्राणाधारों को वहाँ बिछे हुए उपयुक्त आसन में बैठाकर केश सम्हारती हैं, पुनः तिलक स्वरूप कराकर उन्हें आत्म यज्ञ आदि यज्ञों में अनुष्ठित देखकर उन्हीं के ध्यान में मग्न हो जाती हैं किन्तु सामयिक सेवा में विघ्न उपस्थित न हो इसका ध्यान उन्हें बना रहता है। देव पूजन एवं हवनादि की सभी सामग्रियाँ पहले से ही कुंज में उपस्थित रहती हैं। यज्ञावकाश पा जाने पर युगल किशोर-किशोरी को श्रृंगार कुंज में पधारने के लिए श्री सिद्धि जी मंद-मंद मुसकान को बिखेरती हुई रघुनन्दन के पाणि पङ्कज को पकड़ कर विनय करती हैं। आप चुटीली चितवनि, एवं मन्द मुसकान के साथ उठकर श्रृंगार सदन प्रस्थान करते हैं।

यज्ञीय कौशेय वस्त्र पहने हुए तथा चरण पादुका धारण किये हुए युगल विभूति की आभा कुंज प्रान्त को आभान्वित कर रही है। मधुर-मधुर वाद्यों के साथ वर्तमान चर्या के अनुसार गीत गाये जा रहे हैं, नवल दम्पति की कमनीय कान्ति श्री सिद्धि जी सहित सभी सखियों और दासियों के चित्त के सहज स्वभाव को सहज ही विनष्ट करने में सक्षम हो रही है।

श्रृंगार कुंज पहुँचते ही द्वार पर आकर कुंजेश्वरी नवल दम्पति की आरती उतारती है तत्पश्चात स्वागत संप्राप्त कर युगल किशोर श्रृंगार करने के उपयुक्त आसन में पधार जाते हैं। श्री सिद्धि कुँअरि जी दोनों प्राणाधारों को नख-शिखान्त वस्त्राभूषण धारण कराती हैं। अंग-अंग में आभूषण धारण करते समय अपने सरहज के कर स्पर्श से नृपति नन्दन जू उनके प्रीति और भाव के अनुमान की इति न पाकर प्रेम विभोर हो जाते हैं, तदनुसार श्री किशोरी जी

भी अपनी भाभी के प्रेम प्रवाह में बह जाती हैं, श्री सिद्धि जी को कहना ही क्या है? वे अपने ननँद ननदोई के स्पर्श, चितवनि, मुसकनि के दर्शन तथा अपने को उनकी कृपा पात्री के ज्ञान और अपनी सेवा से दम्पति के मुखकमल के विकास को प्राप्त कर तज्जनित आनन्दातिरेक के कारण प्रेम चिन्हों से चिन्हित हो जाती हैं, कभी-कभी श्रृंगार में कुछ का कुछ हो जाता है, पुनः युगल दम्पति एवं सखियों को हंसते देखकर श्रृंगार में सुधार लाती हैं। जावक, अंगराग, कज्जल आदि धारण कराकर अर्थात् पूर्ण श्रृंगार करके आदर्श दिखाती हैं, युगल सरकार दर्श में अपने श्रृंगार को देखकर स्वयं मुग्ध हो जाते हैं, श्री सिद्धि जी की श्रृंगार कला का कौशल्य ननँद-ननदोई को उनके वश कर देता है। श्री सिद्धि जी दीप जलाकर युगल सरकार को श्रृंगार भोग पवाती हैं, आचमन कराकर ताम्बूल और गन्ध समर्पण करती हैं, पुनः माल्यार्पण कर रत्न के गुच्छे, पुष्पों के गुच्छे हाथों में धारण करने को समर्पण करती हैं, पश्चात रत्न सिंहासन में पधरवाती हैं, सखियाँ छत्र, चमर, विंजन, छड़ी, पानदान, इत्रदान, जलझारी आदि सेवासाज लेकर, यथा स्थान खड़ी हो जाती हैं, कुछ अलियाँ नृत्य, गीत, वाद्य की सेवा लेकर तत्कार्य में उद्यत हो जाती हैं। श्री सिद्धि जी स्वयं स्वर्ण थाल में सजायी हुई आर्तिक्य-ज्योति के द्वारा अपने ननँद-ननदोई की आरती उतारती हैं, मंगलानुशासन करती हैं, पुनः बलैया लेकर आत्मनिवेदन करती हैं। श्री नृपतिनन्दन जू की इच्छा जानकर श्री सिद्धि जी स्वयं वीणा गोदी में लेकर तिरछे बैठी हुई, तारों पर कोमल अंगुलियाँ फेरती हैं। आलाप लेकर श्री किशोरी जू के गुणगणों के परिचायक गीत गाती हैं। श्याम सुन्दर रघुनन्दन अपने सरहज के अप्रतिम सौन्दर्य, वीणा में अंगुली फेरनें की प्रक्रिया, शरीर मुद्रा, संगीत कला कोकिल कण्ठ माधुरी एवं भाव भंगिमा को देखकर स्मृति शून्य हो जाते हैं। अपनी भाभी को अपने प्राण प्रियतम के मुखोल्लास विवर्धन की कारण भूता समझ कर श्री किशोरी जू के हृदय में आनन्द की परिवृद्धि होती है। जब श्री सिद्धि जी पुनः वंशी ध्वनि से अपने ननदोई को स्मृति शय्या पर सुला देती हैं, तब श्री जानकी जीवन जू प्रेम की वार्ता कर-करके

अपने सरहज को असीमानन्द की अनुभूति कराते हैं तत्पश्चात सावधान मना होकर सभा कुंज में (जो नित्य लीला निकुंज में ही प्रतिष्ठित है) पधारने की प्रार्थना युगल-सरकार से करती हैं।

नव दूलह-दुलहिन अपने अंग कान्ति को बिखेरते हुए सभी समाज के मन को मुग्ध कर अपहरण करने की कला प्रदर्शन कर रहे हैं। युगल दम्पति की चलनि, चितवनि, मुसुकनि सभी के मन को मथे जा रही है तिस पर और-और अधिक-अधिक उद्दीपन करने के लिए तद्विषयक गीत गाये जा रहे हैं। सभा कुंज पहुँचते ही कुंजेश्वरी आरती उतारती है, पुनः सिंहासन में पधरवा कर छत्र, चमर, विंजन आदि सामग्रियों से श्री सिद्धि जी के संकेतानुसार सखियाँ सेवा में संलग्न हो जाती हैं। श्री कुँअर वल्लभा अपने युगल प्राणाधारों को ताम्बूल, गंध देकर नीरांजन करती हैं, बलैया लेती हैं, पुनः अपने ननँद-ननदोई के प्रसन्नता के लिए सामने स्वर्ण सिंहासन में स्थित हो जाती हैं, सखियाँ सेवा में चतुर्दिक खड़ी हो जाती हैं, युगल विभूति अपने भाभी व सरहज के काय सम्पत्ति, गुण-वैभव और प्रेम की अप्रमेयता को दखकर बड़े सुखी हो रहे हैं। प्रेम व कल्याण गुण-गणों की राहस्यिक चर्चा छिड़ जाने से समाज परमार्थ स्वरूप बन गया, आनन्दमय हो गया, शान्त वातावरण हो गया। तब प्यारे से परस्पर प्रेममयी, विनोदमयी चर्चा कर उन्हें आनन्द देनें का अवसर न पाकर चित्रा जी बोल उठीं, अच्छा हुआ प्यारे जू अब शान्ति के साथ बैठे हुए हैं, बड़ा आनंद आ रहा होगा, क्यों न हो। शान्ति में ऐसा वैलक्षण्य है। चित्रा जी की वार्ता सुनकर प्रीतम जू ने मन्द मुसकान के साथ कहा कि चित्रा जी की चातुरी को धन्य है। कोहवर लीला की स्मृति सबके चित्त में उदय हो आयी, हास विलास होने लगा, अन्त में नृत्य-गान के साथ सभा विसर्जन कर भोग-कुंज में पधारने के लिए श्री सिद्धि जी सनम्र निवेदन प्रस्तुत करती हैं।

भोग कुंज में पहुँचते ही कुंजेश्वरी ने आरती उतार कर युगल सरकार को सिंहासन में पधराया। श्री श्रीधरसुता सिद्धि कुँअरि जी ने पाद्य, अर्घ्य देकर आचमन कराया, भोजन के अनुपयुक्त वस्त्राभूषणों को श्री अङ्गों से उतार कर उन्हें श्रद्धा व

भक्ति के साथ मंजूषे में सुव्यवस्थित रख दिया, तदनन्तर हाथ पकड़कर भोजन आरोगने के लिए चौके में ले जाती हैं। युगल सरकार श्री सिद्धि जी के प्रेमवश उनकी मुसुकनि, चितवनि व रसीली विनोद भरी वाणी का अनुभव करते हुए सुन्दर पीठों में विराज जाते हैं। श्री सिद्धि जी अपने हाथ से विविध प्रकार के व्यञ्जनों से भरे दो स्वर्णथाल अपने ननँद ननदोई के सामने रखकर पाने की प्रार्थना करती हैं। आप दोनों, सरहज सिद्धि जी से विनिर्मित व उनसे परोसे हुए प्रेम के पुट से पूर्ण अन्न को सविधि पाने लगे, सखियाँ मधुर-मधुर विविध वाद्यों के साथ गारी गा रही हैं, समय-समय पर श्री सिद्धि जी और-और रुचिकर व्यञ्जनों को परोसती हैं तथा पास ही रखे हुए स्वादयुक्त जल से भरा गिलास उठाकर जल पीने के लिए देती हैं। भोजन करते हुए श्याम सुन्दर रघुनन्दन बड़े आनंद की अनुभूति कर रहे हैं। श्री राम जी के न-न करने पर भी और पाने की प्रार्थना हास-विलास के साथ करती हैं, तथा परोसकर अपने प्यारे ननँद ननदोई को पाने के लिए बाध्य कर देती हैं। इस प्रकार से पवाने की प्रक्रिया करके आचमन कराती हैं, पुनः सिंहासन में बैठाकर ताम्बूल विविध मसालों के साथ पवाती हैं, गंध लगाती हैं तथा नीरांजन करके बलैया लेती हैं। तत्पश्चात शयनकुंज में पधारने के लिए प्रार्थना करके विनोद पूर्ण मुसकान से युक्त मधुरिम वाणी का विसर्ग करती हैं और सकुचाये हुए लाल साहब का हाथ पकड़कर शयन कुंज को प्रस्थान करती हैं। मधुर-मधुर वाद्यों के साथ नृत्य-गीत भी श्री सिद्धि जी का अनुगमन कर रहा है। कुंज में प्रवेश करते ही कुंजेश्वरी आरती उतारती है, बलैया लेती है तथा आनन्द मूर्ति कोहवर बिहारी बिहारिणी जू का हाथ पकड़ कर सिंहासन में पधरवा देती है। श्री सिद्धि जी मुख धुवाकर सूक्ष्म मुख शुद्धि प्रदान करती हैं, गंध लगाकर शयन आरती उतारती हैं, बलैया लेती हैं, पुनः स्वआसन में बैठकर अपने प्यारे को परम प्रसन्न करने के लिए प्रेम वार्ताओं का प्रयोग करती हैं पारस्परिक प्रेम चर्चा से आनन्द का वेग बढ़ जाता है तत्पश्चात श्री सिद्धि जी विनयावनत वाणी से प्रार्थना कर युगल नव दम्पति को पलँग पर पौढ़ा देती हैं और शयन झाँकी के

दर्शनानन्द का अनुभव करती हुई श्री लक्ष्मीनिधि वल्लभा अपने महल में सखियों से समावृत प्रवेश करती हैं। पहुँचकर परिकर प्रसेवित अपने प्राण-प्रियतम को प्रणाम करती हैं। कुँअर लक्ष्मीनिधि जी अपने प्राणेश्वर बहन बहनोई की सेवा से आयी हुई अपनी प्राण वल्लभा का परम प्यार करते हैं, दोनों प्रभु प्रसाद सेवन करके युगल प्राणाधारों की परस्पर चर्चा करते हुए विश्राम करते हैं जिससे युगल कैंकर्य में कोई विरोध उत्पन्न न हो।

समय से युगल सरकार विश्राम कर पलँग पर बैठे हुए परिकर वृन्दों को आनन्द प्रदान करने का व्यापार कर रहे हैं, इतने ही में समय से श्री सिद्धि जी अपनी सखियों से समावृत अपने ननँद-ननदोई के समीप शयन कुंज में पहुँच कर बलैया लेती हैं, श्री युगल किशोर का मुख धुवाकर ताम्बूल पवाती हैं, गंध लगाती हैं, नीरांजन करती हैं तथा श्री किशोरी जी के उत्कर्ष की परिवृद्धि करने वाली पूर्व गाथाएँ सुनाती हैं। चित्रादि सखियाँ संगीत से सम्बद्ध गीत गाकर सुनाती हैं, श्री आनन्द सिन्धु में आनन्द का ज्वार भाटा आ जाता है। तत्पश्चात सायं स्नान करने के लिए श्री श्रीधर सुता प्रार्थना करती हैं, युगल किशोर स्नान कुंज, यज्ञ कुंज और श्रंगार कुंज की सेवा पूर्वाह्न के अनुसार स्वीकार करके केलि कुंज में पधारते हैं। पहुँचते ही कुंजेश्वरी युगल सरकार की आरती उतार कर कृतकृत्य हो जाती है, अपने सौभाग्य की सीमा का अन्त नहीं पाती। तत्पश्चात श्री सिद्धि जी अपने ननदोई की इच्छानुसार केलि का आयोजन करती हैं, दम्पति प्राणाधार केलि प्रक्रिया से परम-प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। उपरति पाने पर कुँअर वल्लभा, नित्यलीला निकुंज में पधारने के लिए अपने प्राण के प्राणों से प्रार्थना करती हैं, समाज के सहित नव दम्पति प्रस्थान करते हैं।

कुञ्ज में प्रवेश करते ही कुंजेश्वरी आरती उतारती है, जयनाद के साथ सिंहासन में युगल सरकार को पधरवाती है। श्री सिद्धि जी पाद्य, अर्घ्य और आचमन देकर सामयिक सुखद सूक्ष्म भोग पवाकर जलपान कराती हैं, ताम्बूल, गंध माल्य अर्पण करती हैं। सखियाँ छत्र, चमर, विंजन, छड़ी आदि विशेष सेवा साज

लेकर यथास्थान खड़ी हो जाती हैं। स्वयं अपने ननँद ननदोई की आरती नृत्य, गीत, वाद्य के साथ उतारती हैं, मंगलानुशासन करती हैं, पुष्पाञ्जलि समर्पण करती हैं तत्पश्चात अपने प्राणाधिक प्रिय ननँद ननदोई के प्रिय के लिए अनेकानेक लीलाओं का आयोजन करती हैं, युगल सरकार को बड़े ही आनन्द की अनुभूति होती है। इस कुंज में समयानुसार झूलनलीला, रासलीला, विवाह, वसंत विहार, जन्मोत्सव इत्यादि लीलाओं का चक्र घूमता ही रहता है। बीच-बीच में युगल सरकार के अन्य अन्य जन्म कर्म सम्बन्धी लीलाएँ तथा रसिक प्रवर भागवतों के रसमय चरित जो युगल किशोरी किशोर को आनन्द प्रद सिद्ध होते हैं, होते ही रहते हैं। यहाँ के चरित्र का चिन्तन करने का सौभाग्य तो श्री सीतारमण रघुनन्दन श्री राम जी महाराज के वरण कर लेने पर ही सम्भव है। लीला निकुंज की सेवन चर्या की परिसमाप्ति हो जाने पर श्री सिद्धि जी युगल दूलह दुलहिन को बियारी भोग आरोगने के लिए भोग कुंज में पधारने की प्रार्थना करती हैं।

भोग कुंज में पहुँचते ही कुञ्जेश्वरी द्वार पर आकर युगल प्राणाधारों की आरती उतारती हैं, आसन देकर श्री सिद्धि जी पाद प्राक्षालन कर राजभोग पूर्व प्रक्रिया के अनुसार पवाकर नव दूलह दुलहिन को शयन कुंज में स्नेहातिशयता से स्पर्श एवं मधुर विनोद के द्वारा आनन्द का वितरण करती हुईं, प्रवेश कराती हैं। प्रवेश करते ही कुंजेश्वरी आरती उतारती है, मधुर-मधुर वाद्य बज रहे हैं, नृत्य गीत की सरसता सर्वेश्वर- सर्वेश्वरी जू के हृदय में सुख का संचार कर रही है, युगल प्रिया प्रीतम के सुख से सभी मैथिल नारियाँ सुखी हो रही हैं। श्री लक्ष्मी निधि वल्लभा ने युगल हृदय धनियों के प्रसन्नता के लिए उनकी रुचि का अनुसरण करते हुये, दोनों को चौपड़ खेलने के लिए उपयुक्त आसन में पधरवा दिया। खेल प्रारम्भ हो गया, दोनों की चितवनि, मुसकनि, कराम्बुजों से पाँसा फेकने की प्रक्रिया एवं गोटी चलने की गतिविधि देखकर सिद्धि जी ससमाज अत्यानन्द की अनुभूति कर रही हैं, कभी-कभी स्वयं संकेत से गोटी चलने व मारने का सुझाव अपने प्रिय ननँद-ननदोई को देती हैं। पश्चात सिद्धि जी क्रीड़ा उपरति प्राप्त

युगल किशोर का मुख धुवाकर सिंहासन में पधराती हैं। मिश्री, केशर आदि द्रव्यों से मिला हुआ गरम दूध दोनों सरकारों को पीने के लिए प्रेम प्रार्थना कर प्रदान करती हैं। पुनः आचमन करा कर सूक्ष्म मुख शुद्धि व गंध समर्पण कर, शयन आरती करती हैं, मंगलानुशासन करती हैं, आत्म समर्पण करती हैं। सभी सखियाँ नृत्य, गीतादि सेवा से निवृत्त होकर सिद्धि जी सहित श्याम सुन्दर रघुनन्दन से प्रणय वार्ता करती हैं, स्वयं आराध्य को आनन्द का वितरण कर आनन्द की अनुभूति कर रही हैं। धीरे-धीरे युगल सरकार को अलसाते देखकर श्री सिद्धि जी शयनासन पर सस्नेह शयन कराती हैं, पाँव पलोटती हैं, युगल सरकार के न-न कहने पर भी सेवन विधि प्रेमातिशयता के साथ करती हैं। पुनः रक्षा मंत्र पढ़ती हैं, पुनः शयनझाँकी का दृश्य हृदय में रखकर अपने भवन को प्रस्थान करती हैं। कुंजेश्वरी के निर्देश से बाहर कक्ष में चारों ओर पहरे वाली दासियाँ सशस्त्र सजगता के साथ रक्षा कार्य करनें में तत्पर हो जाती हैं।

श्री सिद्धि कुँअरि जी सखियों, सेविकाओं से समावृत धीरे-धीरे पदन्यास करती हुई अपने महल में पहुँचकर अपने प्राणेश्वर श्री सुनैनानन्दवर्धन जू को सस्नेह प्रणाम करती हैं, चरण चूमती हैं, आरती उतारती हैं, इस प्रकार क्रिया करती हुई अपनी प्रियतमा को कुँअर उठाकर अपने आसन में बैठा लेते हैं। श्री सिद्धि जी उनके बहन-बहनोई की अष्टयामीय सेवा का सरस संदेश देकर उन्हें परमानन्द में निमग्न कर देती हैं। श्री लक्ष्मी निधि जी कृतज्ञता एवँ प्रियता प्रकट करते हुए अपनी प्रियतमा को अङ्क में लेकर हृदयालिंगन प्रदान करते हैं। दोनों पारस्परिक प्रेमास्पदों की प्रिय चर्चा से विभोर हो जाते हैं। सखियाँ पाद्य, अर्घ्य, आचमन देकर सामयिक सूक्ष्म प्रभु प्रसाद सेवन कराकर शयन करने की प्रार्थना करती हैं। दोनों अपने आराध्यों का स्मरण करते हुए शयन कर जाते हैं।

सिद्धि सदनीय अष्टयामीय सेवा वर्णन समाप्त

श्री लक्ष्मी निधि निकुंज में जब श्री श्यामसुन्दर की दिनचर्या अर्थात् मज्जन, अशन और शयन अपने श्याल सुनैनानन्द वर्धन जू के साथ-साथ होती है, तब श्री श्रीधर कुमारी अपने प्राणनाथ के साथ श्री कौशल्या नन्दवर्धन जू की अष्टयामीय सेवा अपनी सखी सहेलियों एवं दासियों के साथ कर करके युगल कुमारों के मुखाम्भोजों को विकसित करने का हेतु बनी रहती हैं। यहाँ समय-समय पर कुँअर के भ्रातृगणों, सखागणों और सेवक गणों का प्रवेश होता रहता है। श्री किशोरी जी भी समय-समय पर अपने भैया के भवन में आये बिना नहीं रहती तथा कुँअर लक्ष्मीनिधि जी व श्री सिद्धि जी भी समय समय पर किशोरी जू के दर्शन व सेवा हेतु सीतासदन पहुँचते ही रहते हैं। श्री सीताकान्त जू तथा कुँअर लक्ष्मी निधि जी श्री जनक जी महाराज एवं सुनैनाअम्बा के सदन दर्शनार्थ समय पर पहुँच कर उन्हें परमानन्द की अनुभूति कराते हैं।

अनन्त श्री विभूषित श्री स्वामी रामहर्षण दास जी महाराज का अमूल्य भक्ति साहित्य :-

1 वेदान्त दर्शन (ब्रह्मसूत्र व्याख्या) सजिल्द एवं अजिल्द
2 श्री प्रेम रामायण सजिल्द
3 औपनिषद ब्रह्मबोध
4 गीता ज्ञान
5 रस चन्द्रिका
6 प्रपत्ति- प्रभा स्तोत्र
7 विशुद्ध ब्रह्मबोध
8 ध्यान वल्लरी
9 सिद्धि स्वरूप वैभव
10 सिद्धि सदन की अष्टयामीय सेवा
11 लीला सुधा सिन्धु सजिल्द
12 चिदाकाश की चिन्मयी लीला सजिल्द
13 वैष्णवीय विज्ञान
14 विरह वल्लरी
15 प्रेम वल्लरी
16 विनय वल्लरी
17 पंच शतक
18 वैदेही दर्शन
19 मिथिला माधुरी
20 हर्षण सतसई
21 उपदेशामृत
22 आत्म विश्लेषण
23 राम राज्य
24 सीताराम विवाहाष्टक
25 लीला विलास

प्रकाशन विभाग
श्री रामहर्षण कुंज, नयाघाट, परिक्रमा मार्ग, अयोध्या,
जिला साकेत (उ. प्र.) 224123

उत्तर
नौबत
श्री लक्ष्मीनिधि निकुञ्ज
सप्तावरण
पश्चिम
मणि मण्डप
पूर्व
श्री सीता सदन
श्री मिथिलेश महल
श्री सुनैना सदन
राजभवन
रा ज मा र्ग
दक्षिण